मरूमेघ
किसान ई – पत्रिका
www.marumegh.com पर ऑनलाइन उपलब्ध

©2020 marumegh
ISSN:2456-2904

मसूर के प्रमुख रोग एवं प्रबंधन

वैभव सिंह , सुनैना बिष्ट* एवं अनीता पूयाम

रानी लक्ष्मी बाई केंद्रीय कृषि विश्वविद्यालय, झाँसी (उत्तर प्रदेश)

*Email id: sbpathology@gmail.com

सारांश

मसूर वर्षा आधारित क्षेत्र में लगायी जाने वाली एक प्रमुख दलहनी फसल है जो की कम पानी में अच्छी पैदवार देती है, इसमें प्रोटीन एवं कैल्शियम प्रचुर मात्रा में पाए जाते हैं, जो इसे खाने के लिए महत्वपूर्ण बनती है। इसके अलावा यह फसल मृदा में नत्रजन का संवर्धन भी करती है। बुंदेलखंड क्षेत्र में मसूर की खेती बहुत उपयुक्त है, किन्तु मसूर प्रायः विभिन्न प्रकार के रोगों से प्रभावित होता है, जिसके कारण पैदावार में कमी आती है। इसमें उकठा (wilt), रतुआ (Rust) एवं झुलसा (leaf blight) बुंदेलखंड क्षेत्र में आने वाले प्रमुख रोग है, जिनका निवारण जानना अति आवश्यक है। इस लेख में मसूर में होने वाले रोग और उनके निवारण की विधि का उल्लेख किया गया है।

परिचय

भारत में वर्षा आधारित खेती में मसूर एक प्रमुख दलहनी फसल है , इसमें प्रोटीन एवं कैल्शियम प्रचुर मात्रा में पाए जाते हैं , जो कि बढ़ते बच्चे एवं महिलाओं के लिए महत्वपूर्ण है। बुंदेलखंड क्षेत्र में मसूर की खेती बहुत उपयुक्त है, क्योंकि यह कम पानी में अच्छी पैदावार देती है। इसके अलावा यह फसल मृदा में नत्रजन का संवर्धन भी करती है। मसूर प्रायः विभिन्न प्रकार के रोगों से प्रभावित होता है, जिसके कारण पैदावार में कमी आती है। इसमें बुंदेलखंड क्षेत्र में आने वाले प्रमुख रोग इस प्रकार हैः

1. उकठा (wilt) 2 रतुआ (Rust) 3 झुलसा (leaf blight)

उकठा रोग के लक्षण एवं नुकसान

मुख्यता बुंदेलखंड क्षेत्र में मसूर की फसल उकठा रोग से प्रभावित होती है , जिसके कारण 50 प्रतिशत तक की पैदावार में कमी आती है। यह रोग पौधों के किसी भी अवस्था में आ सकता है, यह एक मृदा जनित रोग है , जिसमें संक्रमण पौधे की जड़ से ऊपर की तरफ बढ़ता है। इस रोग से प्रभावित खेत में मरे हुए पौधे छोटे खंड में देखेंगे, यदि संक्रमित पौधों को उखाड़कर देखें तो जड़ स्वस्थ दिखती है, पर नोड्यूल की संख्या कम हो जाती है और तने पे चीरा लगाने पर, मध्य भाग में गहरे भूरे रंग के दाग दिखाई देते है। संक्रमित पौधे की पत्ती समय के साथ हल्के हरे से पीले रंग की और पीले से भूरे रंग की हो जाती हैं , अन्ततः पौधा सूख कर मर जाता है।

उकठा रोग के लक्षण

रतुआ रोग के लक्षण एवं नुकसान

रतुआ रोग शुरुवात में मुख्यतः पत्तियों में पाया जाता है और बाद में बढ़ती संक्रामिकता के कारण अन्य भागों में भी फैल जाता है। इस रोग में पहले पीले रंग के उभरे हुए धब्बे पतियों के पिछले हिस्से में दिखाई देते हैं और जो बाद में रंग

रतुआ रोग के लक्षण

बदलकर गहरे भूरे रंग के हो जाते हैं , इन धबो से भारी मात्रा में फफूंद के बीजाणु निकलते हैं जो हवा के साथ फैलकर नई पत्तियों को प्रभावित करते है। इस रोग से पैदावर में 70 प्रतिशत का नुकसान होता है।

झुलसा रोग के लक्षण एवं नुकसान झुलसा रोग को अस्कोच्य्ता झुलसा रोग भी कहते है। इस रोग के कारण पत्तियों के दोनों हिस्सों में गोल भूरे रंग के धब्बे पाए जाते है। अनुकूल वातावरण में यह धब्बे फैल कर अनियमित आकार के हो जाते हैं , जिनका रंग भूरे से कला हो जाता है। यदि यह रोग फली को प्रभावित करता है तो यह बीजजनक भी हो जाती है जिसके कारण 50 प्रतिशत तक नुकसान होता है।

झुलसा रोग के लक्षण

मसूर के प्रमुख रोगों का प्रबंधन

इन रोगों से बचने के लिये, बुवाई के समय कुछ निम्लिखित नियंत्रण तकनीक अपनानी चाहिए:

पहला: रोग मुक्त बीज किसी विश्विसनिये स्त्रोत से ही प्राप्त करे।

दूसरा: फसल का चक्रीकरण एवं खेत की स्वछता का ध्यान रखें। खासकर रतुआ रोग की रोकथाम के लिए बाजरा और ज्वार की अन्तवर्तीय फसलें लें।

तीसरा: बुवाई से पूर्व कवक नाशको से बीजौप्चार करें, इसके लिए तीन ग्राम थिरम या कार्बेन्डाजिम को प्रति किलोग्राम बीज में मिला कर ही बोना चाहिए । कवक नाशको के अलावा जैव नियंत्रण भी रोग की रोकथाम के लिए उपयोगी हैं, जैव कारक जैसे की ट्राइकोडर्मा विरिडि से बीजौप्चार करने के लिए चार ग्राम प्रति किलोग्राम बीज में मिला कर ही बोएँ ।

चौथा: हमें यह देखना चाहिए की जिस खेत में हम बुवाई कर रहें हैं वह मृदा स्वस्थ है या नहीं। मृदा को भी कवकनाशी से उपचारित किया जा सकता है, जिससे कोई भी रोग जनक कवक होगा तो वह मर जाएंगे और रोग के प्रकोप को कम किया जा सकता हैं । मृदा उपचार हेतु ब्रसिकोल नामक कवकनाशी का 25 किलोग्राम प्रति हेक्टेयर की दर से उपयोग कर सकते हैं । इसको दो भाग मे देना है – एक भाग बुवाई पूर्व और दूसरा भाग पंद्रह दिनों के बाद करना चाहिए । मृदा उपचार हेतु भी हम ट्राइकोडर्मा विरिडि का 2–5 किलोग्राम सूत्रीकरण को 100 किलोग्राम गोबर की खाद में मिला कर छाए वाली जगह में 30 दिनों के लिए रख दें । तीस दिनों पश्चात गोबर की खाद पर सफेद रंग की कवक का जाल बन जायेगा जो की प्रयोग के लिए तयार है ।

पाँचवा: बुवाई के 35 से 50 दिनों के भीतर यदि रोग के लक्षण देखाई देने पर कवकनाशी कार्बेन्डाजिम का 1 ग्राम या मेंकोजेब का 3 ग्राम प्रति लीटर पानी की दर से घोल बनाकर छिडकाव करें । आवशयकता अनुसार 14 दिनों के अन्तराल पर दुबारा छिडकाव करें, ताकि रोग दुबारा न आये ।

कवकनाशक एक प्रकार के रसायन हैं जो मृदा में अवशेष छोड़ने के कारण वातावरण एवं जीव जंतुओं के लिए हानिकारक हैं, इसीलिए बताई गयी मात्रा के अनुसार ही कवकनाशको का उपयोग करें । इन रोग प्रबंधन तकनीको के माध्यम से किसान रोगों का सफल रोकथाम करके अधिक पैदावार प्राप्त कर सकते हैं , जिससे उनकी आमदनी में वृद्धि होना स्वाभाविक है ।